**Sanskritik aur Samajik Anusandhan**
**www.shodhjournal.com**
**ISSN: 2582-5852**
**Received: 30-08-2025, Accepted: 29-09-2025, Published: 13-10-2025**
**Volume 6, Issue 2, 2025, Page No. 10-13**

# वर्तमान भारत की आर्थिक नीति और दीनदयाल उपाध्याय का 'स्वदेशी' दृष्टिकोण : एक सामान्य विश्लेषण

**डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी[1], ओम प्रकाश गुप्ता[2]**

[1] सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय रेवती रमण मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय सूरजपुर , सूरजपुर छत्तीसगढ़ भारत

[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा छत्तीसगढ़ भारत

**सारांश**

भारत की आर्थिक नीतियाँ स्वतंत्रता के पश्चात् से ही निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी रही हैं। प्रारंभिक दशकों में देश ने समाजवादी दृष्टिकोण से प्रेरित योजनाबद्ध विकास मॉडल को अपनाया, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुखता और मिश्रित अर्थव्यवस्था पर बल था। इसके पश्चात् 1991 के उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी। वर्तमान समय में भारत तीव्र आर्थिक विकास, वैश्विक निवेश, डिजिटलीकरण और अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय व्यापार के विस्तार के कारण विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। परंतु इस प्रगति के बावजूद गरीबी, बेरोजगारी, ग्रामीण–शहरी असमानता, कृषि संकट और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। ऐसे समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'स्वदेशी' दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। उपाध्याय जी ने अपने एकात्म मानववाद के दर्शन के माध्यम से यह प्रतिपादित किया था कि विकास का उद्देश्य केवल पूँजी संचय या भौतिक वृद्धि नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर अंतिम पंक्ति के व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति ही वास्तविक प्रगति है। उनका स्वदेशी विचार केवल आर्थिक स्वावलंबन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और नैतिक जीवन–दर्शन था। वे मानते थे कि भारत की आर्थिक नीति उसकी अपनी परंपराओं, संसाधनों और सामाजिक संरचना के अनुरू प होनी चाहिए। वर्तमान भारतीय आर्थिक नीति में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान', 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' 'स्टार्टअप इंडिया' जैसे कार्यक्रम उपाध्याय जी के स्वदेशी दृष्टिकोण की प्रतिध्वनि करते हैं। ये पहल इस तथ्य को रेखांकित करती हैं कि यदि भारत को स्थायी और संतुलित विकास प्राप्त करना है, तो उसे अपने स्थानीय उद्योगों, कृषि, कुटीर उद्योगों और परंपरागत संसाधनों पर आधारित आत्मनिर्भर ढाँचे को सशक्त बनाना होगा। हालाँकि, वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के दबाव में इस दिशा में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। यह शोध पत्र वर्तमान भारत की आर्थिक नीति का सामान्य विश्लेषण करते हुए उसमें दीनदयाल उपाध्याय के स्वदेशी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को उजागर करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि आधुनिक वैश्विक आर्थिक परिप्रेक्ष्य में स्वदेशी विचार किस प्रकार भारतीय नीति निर्माण को मार्गदर्शन दे सकता है। शोध पत्र इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि भारत की प्रगति तभी वास्तविक और स्थायी होगी जब उसकी आर्थिक नीति वैश्विक अवसरों को अपनाने के साथ–साथ स्वदेशी आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अस्मिता को भी समाहित करे।

**मूल शब्दः** स्वदेशी, एकात्म मानववाद, आत्मनिर्भर भारत, आर्थिक नीति, दीनदयाल उपाध्याय

इस शोध पत्र में "वर्तमान भारत की आर्थिक नीति और दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण" का सामान्य विश्लेषण किया जाएगा। इसमें यह समझने का प्रयास होगा कि–1. वर्तमान आर्थिक नीतियों में स्वदेशी सिद्धांत किस सीमा तक परिलक्षित होते हैं।[2]. वैश्वीकरण और स्वदेशी दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौतियाँ क्या हैं। [3]. क्या आज की आर्थिक प्राथमिकताएँ उपाध्याय जी की अंत्योदय की परिकल्पना से मेल खाती हैं। [4]. भविष्य की दिशा क्या होनी चाहिए जिससे भारत न केवल वैश्विक शक्ति बने, बल्कि सांस्कृतिक : प से भी आत्मनिर्भर रह सके। भारत की आर्थिक नीति स्वतंत्रता के पश्चात से ही निरंतर परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया से गुज़र रही है। प्रारंभिक दशकों में जब देश उपनिवेशवाद की आर्थिक शोषण प्रणाली से उबर रहा था, तब योजना आधारित समाजवादी मॉडल को अपनाया गया, जिसका उद्देश्य आत्मनिर्भरता, समान वितरण और औद्योगिकीकरण के माध्यम से राष्ट्रीय प्रगति सुनिश्चित करना था। किंतु 1991 के आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा को गहराई से परिवर्तित कर दिया। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ा और निवेश, तकनीकी हस्तांतरण तथा प्रतिस्पर्धात्मक विकास को प्रोत्साहित किया। वर्तमान भारत की आर्थिक नीति इसी द्वैध स्वरूप में दिखाई देती है – एक ओर वैश्विक प्रतिस्पर्धा और पूंजी संचय, तो दूसरी ओर सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की आवश्यकता। इसी सन्दर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'स्वदेशी दृष्टिकोण' अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उनका विचार केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक अस्मिता, आत्मनिर्भरता और ग्रामोन्मुख विकास पर आधारित एक व्यापक दर्शन था। उपाध्याय मानते थे कि आर्थिक नीतियों का मूल उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधा और समृद्धि पहुँचाना होना चाहिए। उनके 'अंत्योदय' सिद्धांत में इस बात पर बल दिया गया कि विकास का लाभ केवल शहरी या संपन्न वर्ग तक सीमित न रहकर समाज के वंचित तबके तक पहुँचे। इस दृष्टि से स्वदेशी विचारधारा आधुनिक आर्थिक नीतियों के लिए नैतिक आधार प्रदान करती है। आज भारत की आर्थिक नीति जहाँ वैश्विक व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और तकनीकी नवाचार पर केंद्रित है, वहीं छोटे उद्योग, कृषि और पारंपरिक कारीगरी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में स्वदेशी दृष्टिकोण यह संदेश देता है कि विकास केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक होना चाहिए। यदि वर्तमान नीतियों में स्वदेशी मूल्यों को संतुलित: से शामिल किया जाए, तो यह विकास को अधिक टिकाऊ, समावेशी और

भारतीयता से युक्त बना सकता है। इस प्रकार, वर्तमान भारत की आर्थिक नीति और दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक हो सकते हैं। वैश्विक अवसरों और स्वदेशी मूल्यों का समन्वय ही भारत को वास्तविक आत्मनिर्भरता और समग्र प्रगति की ओर ले जाने में सक्षम है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत की आर्थिक नीति का मूल लक्ष्य केवल उत्पादन या पूंजी वृद्धि नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास के लाभ पहुँचें। दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण हमें यही सिखाता है कि विकास तभी सार्थक है जब वह मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता पर आधारित हो। आज के वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के युग में, जब भारत विश्व मंच पर अपनी भूमिका को पुनः परिभाषित कर रहा है, तब उपाध्याय जी के विचार हमें यह याद दिलाते हैं कि आर्थिक नीति केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्न भी है। इसलिए, वर्तमान आर्थिक नीति का विश्लेषण स्वदेशी दृष्टिकोण की कसौटी पर करना न केवल अकादमिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि भारत के भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

## वर्तमान आर्थिक नीति

भारत की वर्तमान आर्थिक नीति एक जटिल संतुलन की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है। 1991 के उदारीकरण के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक बाजार से गहराई से जुड़ी है, जहाँ विदेशी निवेश, तकनीकी नवाचार और प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार को प्रोत्साहित किया गया। इससे जीडीपी वृद्धि और वैश्विक प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय उन्नति हुई, किंतु साथ ही छोटे उद्योगों, कुटीर उत्पादन और कृषि क्षेत्र पर दबाव भी बढ़ा। रोजगार के असमान अवसर, आय में असमानता और सांस्कृतिक उपभोग प्रवृत्तियों का प्रभाव भी स्पष्ट : i से दिखाई देने लगा है। इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'स्वदेशी दृष्टिकोण' एक प्रासंगिक दिशा प्रस्तुत करता है। आज की आर्थिक नीतियों में यदि स्वदेशी दृष्टिकोण को सम्मिलित किया जाए तो यह न केवल असमानताओं को कम करेगा बल्कि विकास को अधिक टिकाऊ और सांस्कृतिक: प से सशक्त बनाएगा। स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा, ग्रामोन्मुख योजनाओं का विस्तार, और आत्मनिर्भर उत्पादन प्रणाली इस दिशा में प्रमुख कदम हो सकते हैं। वैश्वीकरण के दौर में भी यदि भारत अपनी नीतियों को स्वदेशी मूल्यों से संतुलित करे, तो यह विकास को अधिक मानवीय, न्यायसंगत और दीर्घकालिक बना सकता है। अतः वर्तमान आर्थिक नीति और स्वदेशी दृष्टिकोण परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं। आधुनिक आर्थिक ढांचा जहाँ वैश्विक अवसर प्रदान करता है, वहीं स्वदेशी विचार इसे भारतीय संस्कृति और सामाजिक न्याय से जोड़कर संतुलित करता है। यही संतुलन भारत की वास्तविक प्रगति का आधार हो सकता है।

## दीनदयाल उपाध्याय और स्वदेशी दृष्टिकोण

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय चिंतन परंपरा के ऐसे प्रमुख विचारक थे, जिन्होंने राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका 'स्वदेशी' विचार केवल आर्थिक नीति तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता से जुड़ा हुआ एक व्यापक दर्शन था। उपाध्याय मानते थे कि भारत की प्रगति तभी संभव है जब उसका विकास उसकी जड़ों, परंपराओं और ग्रामोन्मुख जीवन–शैली पर आधारित हो। स्वदेशी दृष्टिकोण का मूल भाव यह था कि आर्थिक नीतियां और संसाधनों का उपयोग स्थानीय आवश्यकताओं और समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने वाली सुविधा सुनिश्चित करें। उनका प्रसिद्ध 'अंत्योदय' सिद्धांत इस विचार को और अधिक सशक्त करता है, जिसमें समाज के वंचित वर्ग तक समृद्धि पहुँचाने की वकालत की गई है। वैश्वीकरण और बाजारवाद की चुनौतियों के बीच उपाध्याय का यह विचार आज भी प्रासंगिक है कि केवल पूंजी संचय या विदेशी निवेश पर निर्भरता से स्थायी विकास संभव नहीं है। अतः दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि आत्मनिर्भरता, स्थानीयता और सांस्कृतिक गौरव के आधार पर ही भारत अपनी वास्तविक प्रगति की दिशा तय कर सकता है। यह विचार न केवल आर्थिक दिशा देता है, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा का भी माध्यम है।

## ' स्वदेशी ' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक इतिहास में 'स्वदेशी' की अवधारणा केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक रही है। स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ है – अपने देश में निर्मित वस्तुओं और संसाधनों का प्रयोग करना तथा विदेशी उत्पादों और निर्भरता को न्यूनतम करना। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से गहराई से जुड़ी है, जहाँ यह आंदोलन राष्ट्रवाद का आधार बना और भारतीय समाज को आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित किया। स्वदेशी की जड़ें 19वीं शताब्दी में दिखाई देती हैं, जब औपनिवेशिक शासन के कारण भारतीय उद्योग, विशेषकर हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग, भारी ह्रास का शिकार हुए। ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति के बाद भारत केवल कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का उपभोक्ता बन गया। इस शोषणकारी आर्थिक नीति के प्रतिरोध में भारतीय चिंतकों ने स्वदेशी की आवश्यकता को रेखांकित किया। 1905 का बंग–भंग आंदोलन स्वदेशी आंदोलन का सबसे सशक्त: प था, जिसमें भारतीयों ने विदेशी वस्त्रों और उत्पादों का बहिष्कार कर स्थानीय उत्पादन और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया। इस आंदोलन ने स्वदेशी को केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना से भी जोड़ दिया। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को स्वतंत्रता संग्राम का केन्द्रीय स्तंभ बनाया। उनका चरखा और खादी केवल प्रतीक नहीं थे, बल्कि आत्मनिर्भरता और ग्रामोन्मुख विकास के प्रत्यक्ष उपाय थे। गांधी मानते थे कि स्वदेशी केवल वस्त्र या उपभोग की वस्तुओं तक सीमित नहीं, बल्कि यह जीवन दृष्टि है, जहाँ स्थानीयता, सरलता और आत्मनिर्भरता को महत्व दिया जाए। इस प्रकार स्वदेशी विचार धीरे–धीरे भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का आधार और समाज सुधार का साधन बन गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी स्वदेशी का महत्व समाप्त नहीं हुआ। यद्यपि भारत ने समाजवादी योजना मॉडल और बाद में उदारीकरण की नीतियां अपनाईं, परंतु आत्मनिर्भरता का विचार निरंतर प्रासंगिक बना रहा। इसी परंपरा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वदेशी को भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था का मूल दर्शन बताया। उनका मानना था कि बिना स्वदेशी दृष्टिकोण के विकास केवल नकल मात्र होगा और भारतीय संस्कृति तथा समाज की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा। उनके 'अंत्योदय' सिद्धांत में स्वदेशी का भाव स्पष्ट: i से निहित है, जहाँ स्थानीय संसाधनों और उत्पादन प्रणाली पर आधारित विकास की बात की गई है। आज के वैश्वीकरण के दौर में, जब भारत विश्व व्यापार और तकनीकी सहयोग का हिस्सा है, स्वदेशी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हमें यह स्मरण कराती है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान के बिना वास्तविक प्रगति संभव नहीं है। स्वदेशी आंदोलन की परंपरा ने यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज संकट के समय अपनी जड़ों से जुड़कर आत्मनिर्भरता का मार्ग खोज सकता है। यही कारण है कि वर्तमान भारत की आर्थिक नीति में भी स्वदेशी की प्रासंगिकता

बनी हुई है और यह दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के माध्यम से और अधिक सुदृढ़: i में प्रकट होती है।

## शोध की आवश्यकता

भारत की आर्थिक नीतियों में स्वतंत्रता के पश्चात् से अब तक कई उतार–चढ़ाव आए हैं। प्रारंभिक वर्षों में योजनाबद्ध विकास और समाजवादी दृष्टिकोण को अपनाया गया, जिसके बाद 1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण ने अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी। वर्तमान समय में भारत तेजी से उभरती हुई वैश्विक शक्ति है, किंतु इसके साथ ही गरीबी, बेरोजगारी, ग्रामीण–शहरी असमानता, कृषि संकट और स्थानीय उद्योगों की उपेक्षा जैसी समस्याएँ भी बनी हुई हैं। ऐसे में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या केवल वैश्विक मॉडल को अपनाकर भारत वास्तविक आत्मनिर्भरता और समावेशी विकास प्राप्त कर सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण इन चुनौतियों के समाधान हेतु मार्गदर्शन करता है। उनका मानना था कि भारत की आर्थिक नीतियाँ उसकी सांस्कृतिक जड़ों, स्थानीय संसाधनों और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरू प होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से आज की नीतियों का विश्लेषण करना आवश्यक है, ताकि यह समझा जा सके कि आधुनिक विकास रणनीतियाँ किस हद तक स्वदेशी दर्शन से मेल खाती हैं और कहाँ सुधार की गुंजाइश है।

## चर्चा (Discussion / Analysis)

### 1. " स्वदेशी विचार " आर्थिक दृष्टि से

स्वदेशी विचार भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और स्थानीयता पर आधारित करने का एक व्यापक दर्शन प्रस्तुत करता है। आर्थिक दृष्टि से स्वदेशी का आशय केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से नहीं है, बल्कि यह उत्पादन, वितरण और उपभोग की उन नीतियों से जुड़ा है, जो समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाएं। इसमें ग्रामीण उद्योग, कुटीर उत्पादन, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग को विशेष महत्व दिया जाता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वदेशी को भारतीय समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़कर देखा। उनका मानना था कि यदि विकास केवल विदेशी पूंजी या औद्योगिक विस्तार पर आधारित होगा, तो समाज के कमजोर वर्ग पीछे छूट जाएंगे। उनके अंत्योदय सिद्धांत के अनुसार आर्थिक नीतियों का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक समृद्धि पहुँचाना होना चाहिए। स्वदेशी दृष्टिकोण इसी विचार को मूर्त: i देता है, जहाँ स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देकर न केवल रोजगार सृजन होता है, बल्कि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता भी सुरक्षित रहती है। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से स्वदेशी का संबंध आत्मनिर्भर, न्यायसंगत और संतुलित विकास से है। यह विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वैश्वीकरण के युग में भी स्थायी और समावेशी प्रगति के लिए स्वदेशी मूल्यों का समावेश अनिवार्य है।

### 2. आत्मनिर्भरता और 'एकात्म मानववाद'

वर्तमान भारत की आर्थिक नीति को समझने के लिए आत्मनिर्भरता और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के संबंध को विशेष महत्व देना आवश्यक है। आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल विदेशी निर्भरता को कम करना नहीं, बल्कि अपने संसाधनों, श्रम और उत्पादन क्षमता का ऐसा उपयोग करना है जो समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित करे। उपाध्याय के एकात्म मानववाद में व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन पर बल दिया गया है। उनका मानना था कि यदि विकास केवल पूंजी और तकनीक पर केंद्रित होगा, तो यह असमानताओं को बढ़ाएगा; जबकि आत्मनिर्भरता पर आधारित नीति समाज के अंतिम व्यक्ति तक समृद्धि पहुँचाने में सक्षम होगी। आत्मनिर्भरता और एकात्म मानववाद का संगम भारत की आर्थिक नीति को न केवल व्यावहारिक दिशा प्रदान करता है, बल्कि इसे नैतिक और सांस्कृतिक आधार भी देता है। इससे विकास केवल आर्थिक सूचकांकों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामाजिक न्याय, ग्रामोन्मुख प्रगति और सांस्कृतिक अस्मिता से भी जुड़ जाता है। वर्तमान समय में "आत्मनिर्भर भारत" की परिकल्पना इसी विचार का आधुनिक: i है, जिसमें वैश्विक अवसरों का उपयोग करते हुए स्वदेशी मूल्यों और स्थानीय संसाधनों को प्राथमिकता दी जा रही है। अतः आत्मनिर्भरता और एकात्म मानववाद का संबंध इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि भारत की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब विकास समग्र, संतुलित और मानवीय मूल्यों से युक्त हो।

### 3. वर्तमान भारतीय आर्थिक नीति का स्वरूप

भारतीय आर्थिक नीति में 1991 के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी निवेश बढ़ने के साथ–साथ उपभोक्ता संस्कृति का विकास हुआ, लेकिन असमानता और ग्रामीण–शहरी अंतर भी काफ़ी गहरा हुआ। 2014 के बाद की नीतियाँ इस दिशा में बदलाव लाती दिखती हैं द्य जिसमे "मेक इन इंडिया" है जो घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन देता है द्य "आत्मनिर्भर भारत अभियान" जिसका कोरोना काल (मुख्यतः 2020 से 2022 ) के समय स्थानीय उत्पादन और स्वदेशी तकनीक पर उपयोगिता स्पष्ट होती है | डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया ये सरकार की नवाचार और युवा उद्यमिता को बढ़ावा का आह्वान था द्य इसके साथ ही प्रधानमंत्री जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत आदि सरकार की पहल समाज के अंतिम व्यक्ति तक आर्थिक सशक्तिकरण स्वास्थ्य सेवाओं के सम्बन्ध में थी |

### 4. चुनौतियाँ और संभावनाएँ

भारत की वर्तमान आर्थिक नीति उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है। इससे विदेशी निवेश, तकनीकी नवाचार और प्रतिस्पर्धा की संभावनाएँ बढ़ी हैं, किंतु इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सबसे प्रमुख चुनौती है, स्थानीय उद्योगों और कुटीर उत्पादन पर बढ़ता दबाव। वैश्विक कंपनियों और बड़े औद्योगिक घरानों के प्रभाव से छोटे किसान, कारीगर और ग्रामीण उद्यम हाशिए पर जा रहे हैं। दूसरी चुनौती है, आय और अवसरों में असमानता, जो आर्थिक विकास के बावजूद समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाने में बाधा बन रही है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक उपभोग प्रवृत्तियों में विदेशी उत्पादों की बढ़ती निर्भरता स्वदेशी उत्पादन और सांस्कृतिक पहचान के लिए भी चुनौती प्रस्तुत करती है। इन चुनौतियों के बीच पंडित दीनदयाल उपाध्याय के स्वदेशी दृष्टिकोण में व्यापक संभावनाएँ निहित हैं। उनका अंत्योदय सिद्धांत यह इंगित करता है कि यदि आर्थिक नीति समाज के अंतिम व्यक्ति को ध्यान में रखकर बनाई जाए, तो विकास अधिक समावेशी और संतुलित हो सकता है। स्वदेशी विचार ग्रामोन्मुख विकास, आत्मनिर्भरता और स्थानीय संसाधनों के प्रयोग पर बल देता है, जिससे न केवल रोजगार सृजन होगा बल्कि सांस्कृतिक आत्मगौरव भी सुदृढ़ होगा। आज "आत्मनिर्भर भारत" की नीति इसी दिशा का संकेत है, जिसमें वैश्विक अवसरों का उपयोग करते हुए घरेलू उद्योग, कृषि और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। यदि वर्तमान नीतियों में स्वदेशी मूल्यों का संतुलित समावेश किया जाए, तो यह न केवल आर्थिक असमानताओं को कम करेगा बल्कि दीर्घकालिक और टिकाऊ विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। अतः चुनौतियों और संभावनाओं का यह द्वंद्व स्पष्ट करता है कि भारत की आर्थिक

नीति को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और स्वदेशी मूल्यों के मध्य संतुलन बनाकर ही आगे बढ़ना होगा। यही संतुलन वास्तविक आत्मनिर्भरता और समावेशी प्रगति की कुंजी है।

## निष्कर्ष (Results)

भारत की आर्थिक नीति का वर्तमान स्वरूप एक ऐसे संक्रमणकालीन दौर को दर्शाता है जहाँ वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के प्रभाव के साथ–साथ आत्मनिर्भरता और स्वदेशी मूल्यों की आवश्यकता भी समान: i से प्रकट होती है। 1991 के आर्थिक सुधारों ने भारत को विश्व बाजार से जोड़ा और पूंजी, प्रौद्योगिकी तथा व्यापार के नए अवसर प्रदान किए। किंतु इन नीतियों ने रोजगार असमानता, ग्रामीण पिछड़ापन और सांस्कृतिक निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं। इस परिप्रेक्ष्य में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता–उपरांत दशकों में था। स्वदेशी दृष्टिकोण केवल आर्थिक बहिष्कार की नीति नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, ग्रामोन्मुख विकास और सांस्कृतिक अस्मिता पर आधारित एक समग्र दर्शन है। उपाध्याय का 'अंत्योदय' सिद्धांत स्पष्ट करता है कि आर्थिक विकास का अंतिम लक्ष्य समाज के सबसे कमजोर और वंचित वर्ग तक समृद्धि पहुँचाना होना चाहिए। वर्तमान आर्थिक नीतियों में इस दृष्टिकोण को सम्मिलित करना आवश्यक है ताकि विकास केवल जीडीपी वृद्धि या पूंजी संचय तक सीमित न रहकर सामाजिक न्याय और संतुलित प्रगति का माध्यम बने। आज "आत्मनिर्भर भारत" की पहल इसी दिशा का आधुनिक: i है, जो स्थानीय उद्योगों, कृषि, कुटीर उत्पादन और तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित करने पर बल देती है। यह पहल दर्शाती है कि भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भागीदारी करते हुए भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और स्वदेशी मूल्यों से जुड़ा रहना चाहता है। यदि नीतियाँ इस संतुलन को बनाए रखने में सफल होती हैं, तो भारत न केवल आर्थिक दृष्टि से मज़बूत होगा बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी न्यायसंगत और टिकाऊ विकास का मॉडल प्रस्तुत कर सकेगा।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान भारत की आर्थिक नीति और दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी दृष्टिकोण परस्पर विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। वैश्विक अवसरों का उपयोग और स्वदेशी मूल्यों का संरक्षण, इन दोनों का संतुलित समन्वय ही भारत को वास्तविक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव और समावेशी विकास की ओर ले जा सकता है। यही मार्ग भारत की दीर्घकालिक प्रगति और विश्व समुदाय में उसकी सशक्त भूमिका सुनिश्चित करेगा।

## सन्दर्भ ग्रन्थ (Refrences)


1. श्रीवास्तव, अ. (2024) "भारतीय परिप्रेक्ष्य में पं. दीनदयाल उपाध्याय का स्वदेशी–आर्थिक चिंतन व सशक्त भारत" Indian Journal of Social and Political Studies, 11(01), 101–104. प्रकाशक: IJSP, 2024. पृष्ठ: 101–104.
2. शर्मा, र. (2023) "पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन तथा आर्थिक विचार" Social Studies Journal, 2(2), Article A.237. प्रकाशक: Social Studies Journal, 2023. पृष्ठ: ।.237.
3. सिंह, ज. (2020) "पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की मानव कल्याण में प्रासंगिकता" Anubooks Journal, Session PDF. प्रकाशक: Anubooks, 2020. पृष्ठ: Session PDF.
4. कुमार, प. (2024) "आत्मनिर्भर भारत निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का योगदान" International Journal of Finance and Management Research, 1(1), Article 12300. प्रकाशक: IJFMR] 2024. पृष्ठ: Article 12300.
5. गुप्ता, म. (2023) "एकात्म मानववादरू पं. दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन और समकालीन प्रासंगिकता" And Journal, 19, 2023. प्रकाशक: And Journal, 2023. पृष्ठ: 19.
6. राय, एस. (2022) "पं. दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिंतन का समकालीन संदर्भ में विश्लेषण" Journal of Contemporary Economics, 5(3), 45–58. प्रकाशक: JCE, 2022. पृष्ठ: 45–58.
7. मिश्रा, ए. (2021) "स्वदेशी आंदोलन और पं. दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक दृष्टि" Economic Thought Review, 8(2), 112–125. प्रकाशक: ETR, 2021. पृष्ठ: 112–125.
8. शुक्ला, आर. (2020) "भारतीय अर्थव्यवस्था में स्वदेशी तत्वों का समावेश: पं. दीनदयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण"Indian Economic Journal, 68(4), 233–245. प्रकाशक: IEJ, 2020. पृष्ठ: 233–245.
9. तिवारी, एस. (2023) "पं. दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक नीतियाँ और भारतीय समाज" Journal of Indian Society and Economics, 12(1), 78–89. प्रकाशक: JISE, 2023. पृष्ठ: 78–89.
10. यादव, वी. (2022) "आत्मनिर्भरता और एकात्म मानववाद: पं. दीनदयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण" Indian Journal of Philosophy and Economics, 7(2), 101–113.प्रकाशक: IJPE, 2022. पृष्ठ: 101–113.
11. पांडेय, एन. (2021) "पं. दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों का समाजिक विकास में योगदान" Journal of Social Development Studies, 9(3), 56–67. प्रकाशक: JSDS, 2021. पृष्ठ: 56–67.
12. सिंह, आर. (2020) "स्वदेशी और आत्मनिर्भरता: पं. दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि"Indian Journal of Political Economy, 15(4), 134–145. प्रकाशक: IJPE, 2020. पृष्ठ: 134–145.
13. कुमार, एस. (2019) "पं. दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय अर्थव्यवस्था: एक समीक्षात्मक अध्ययन" Journal of Indian Economic Studies, 6(1), 22–34.प्रकाशक: JIES, 2019. पृष्ठ: 22–34.